Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शिवरीनारायण अंचल का सांस्कृतिक महत्व

डॉ. वर्षा सूर्यवंशी*

* संविदा सहायक प्राध्यापक (इतिहास) डॉ खूबचंद बघेल शा. पी.जी. महाविद्यालय, भिलाई-3 (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – शिवरीनारायण अंचल का सांस्कृतिक महत्व सत्य में निहित है कि वह मानव के उद्धोधन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। भारतीय संस्कृति धर्म को जीवन से अलग करने की बात नहीं मानती, अपितु वह मानती है कि धर्म ही जीवन की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

प्रस्तावना – मानव-मन मेकं सभ्य और विकसित के साथ ही आदिम, पुरातन एवं शिशु भी उपस्थित रहता है। हमारे अन्दर की जड़ता और बुराई है, उसके विरूद्ध हमें संघर्ष जारी रखना चाहिए। हमारे शत्रु हमारे अन्दर ही हैं जो आग हमारे भीतर जलती है, वह सब अज्ञान एवं त्रुटि के उस अन्त: क्षेत्र से उठती हैं, जिसमें हम रहते हैं। मानव की महिमा इस बात में नहीं कि वह कभी गिरे नहीं, बल्कि इस बात में है कि हर बार वह गिरने पर उठ खड़ा हो। आत्मविजय लालसा से शान्ति तक पहुँचने का ही मार्ग है। पाप करने एवम् दु:ख भोगने के जीवन की अपेक्षा एक महत्तर जीवन है। किसी मनुष्य की साधुता की मात्रा का परीक्षण इस बात से होता है कि वह किस सीमा तक अपनी प्रकृति की दुर्बलताओं पर प्रभुत्व पाने में समर्थ हुआ है। धर्म जीवन से बाहर ले जाने वाला मार्ग है। सभी धर्मो में जीवन का निषेध करने वाले मनोवेगों की अन्त: क्रिया बारंबार भारतीय चिन्तन-धारा को नूतन रूप दिया है और आविश्रान्त आध्यात्मिक अन्वेषण में भारत को अग्रसर किया है।

यहां वर्तमान धर्म-संकट की फलती-फूलती विषबेलों पर उनके विचार अक्षरस: प्रासंगिक एवं सत्य हैं। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसर मानव-जाति आज इतिहास के महत्तम संकट के बीच से गुजर रही है, एक सामान्य सत्य है। हमारी यह संकटापन्न स्थिति मानवात्मा के साथ विज्ञान और प्रोद्योगिकी की आश्चर्यजनक गति का समञ्जन न होने के कारण उत्पन्न हुई है। इस तथ्य के होते हुए भी कि महान वैज्ञानिक आविष्कारों में हमें प्रकृति की दासता से मुक्त कर दिया हैं, हम एक प्रकार के मनोरोग से, एक प्रकार के सांस्कृतिक विघटन से पीड़ित दिखाई पड़ते है।

सांस्कृतिक साम्राज्यों के महत्व इसीलिए स्थापित सत्य हैं। शिवरीनारायण भी इन्हीं सांस्कृतिक पुञ्जों में से एक है। शिवरीनारायण की संस्कृति मानव जाति की उच्चतम उपलब्धियों एवं विचारधाराओं का समवेत रूप है। यहॉ की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक उपलब्धियॉ हमारे राष्ट्रीय संस्कृति के प्राण हैं।

भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है- यअनेकता में एकता की भावना। यहॉ सम्प्रदायों, संस्कारों, रीति-रिवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों, उपासना पद्धतियों आदि के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मान्यताऍ व्याप्त हैं, परन्तु उनका मूल रूप तो ऋग्वेद की वाणी में निहित है जिसके अनुसार, एक सद्विपा बहुधा वदन्ति।

हमारी संस्कृति धर्म से अनुप्राणित है। धार्मिक सहिष्णुता की व्यापकता के कारण हमने वैचारिक स्वतन्त्रता का पूर्ण समर्थन व सम्मान किया है। विभिन्न दर्शनों, मतों, पंथों का श्रवण आदि भी करते आए है। फिर भी हमारी संस्कृति अक्षुण्य है। हमारी आद्य संस्कृति का मूल मंत्र है –

अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् ।।

अर्थ – यह मेरा अपना है और यह नहीं है, इस प्रकार की गणना छोटे/लघु चित्त या सत्रकुचित मन वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

अर्थवेद के पृथ्वी सूत्र में कहा गया है 'यह भूमि मेरी मॉ है और मैं इसका पुत्र हूँ।' माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।' यद्यपि इसमें बसने वालों की विभिन्न भाषाऍ हैं, अनेक रीति-रिवाज हैं, विविध प्रकार की वेश-भूषाऍ हैं, तथापि 'जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं, नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्' के आधार पर भिन्नताऍ होते हुए भी पृथ्वी उन्हें स्वीकार करती है। तुम्हारी ही गोद का आश्रय प्राप्त कर हमारे पूर्वजों ने अनेक विक्रम के कार्य किये हें – 'यस्याँ पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे और उनके पराक्रम के कार्य ही हमारा इतिहास हैं। यह पृथ्वी,पर्वत, मैदान, पठार, अरण्य, वन, उपवन, नदियों आदि का लाव मात्र नहीं है वरन् वह हमार जन्मदात्री माता की तरह स्वर्ग से भी श्रेष्ण है – 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। समताविलसित भारती, सर्व जगते श्रेष्ठी।।'

भारतीय उपमहाद्धीप धर्म का वह परिपथ है जिस पर शिवरीनारायण जैसा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक केन्द्र स्थापित है। यही वैश्विक संस्कृति का सत्य साधित मार्ग है। शिवरीनारायण प्रभु श्रीराम, भगवान जगन्नाथ तथा माता शबरी की आद्य नगरी है जो भगवान राम की कर्मभूमि छत्तीसगढ़ की पुण्य सलिलाओं महानदी, शिवनाथ तथा जोंकनद के त्रिवेणी संगम पर स्थित अद्भुत सांस्कृतिक तीर्थ है। मैकल पर्वत श्रृंखला की तलहटी निहित निज, अप्रतिम सौन्दर्य एवं चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमाओं के आधिक्य के वजी से पुराणशिरोमणि स्कंद पुराण में इस मोक्षदेय क्षेत्र को श्री नारायण क्षेत्र तथा श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र के नामों से उद्धोधित किया जाता है। यह प्राकृतिक नैसर्गिकता से सम्पन्न छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी है जो जॉजगीर-चांपा जिले स्थित, जॉजगीर जिला मुख्यालय से 60 कि.मी., चांपा जंक्शन से 70 कि.मी., कोरबा जिले से 110 कि.मी., रायगढ़ से सारंगढ़ होकर 110 कि.मी. दक्षिण पूर्वी मध्य रेल्वे के बिलासपुर जंक्शन से

64 कि.मी., रायपुर से बलौदाबाजार होकर 120 कि.मी. की दूरी पर 21°40' उत्तरी अक्षांश तथा 82°35' पूर्वी देशांश पर अवस्थित है।

यहां दर्शनार्थ कनकनंदिनी महानदी, भागीरथी शिवनाथ नदी, सहगामिनीधारा जोंक नदी के संगम का भावभीना अभिभूतिपूर्ण, हृदयस्पर्शी दृश्य, भगवत्वत्सल भगवान श्री शबरीनारायण और उनके श्रीचरणों का अनवरत् पाद-प्रक्षालन करता अक्षत मोक्षदायी नारायणपदी श्री रोहिणी कुंड, सिद्ध चंद्रचूड़ महादेव, श्री केशवनारायण, श्री रामजानकी मंदिर, विभिन्न मठ, मठ परिसर, तदन्तर स्थित पूज्य महंतो की समाधियॉ, भगवान श्रीपुरीश्वर जगन्नाथ संग बलभद्र व सुभद्रा जी, श्रीराम लक्ष्मण जानकी मंदिर, माता शबरी के मधुर श्रीफल के रस-माधुरी का आस्वादन करते श्रीराम संग लक्ष्मण मंदिर, श्रीकृष्ण वट वृक्ष, गादी चौरा, माखन साव घाट स्थित महेश्वरनाथ और शीतला माता देवी मंदिर तथा उसके परिसर स्थित अन्यान्य देवी-देवताओं के देवालय, जोगीडीपा का सिद्ध बजरंगबली का प्राचीन मंदिर, यहां से मात्र 02 कि.मी. के दायरे पर स्थित ऐतिहासिक, पुरातन नगरी खरौद स्थित लक्ष्मणेश्वर महादेव, इंदलदेव तथा सौराइन दाई (शबरी) मंदिर, गिरि गोस्वामियों का शैव मठ, 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित केरा का चण्डी दाई का मंदिर, 17 कि.मी. के दायरे पर निर्मित नवागढ़ का लिंगेश्वर महादेव मंदिर, बिलासपुर गमन मार्ग मे 11 कि0मी0 की दूरी पर निर्मित मेंहदी का सिद्ध हनुमान मंदिर, 12 कि.म.ी के दायरे पर स्थित सतनाम परम्परा का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तीर्थ गिरौदपुरी स्थित गुरू घासीदास जी का मन्दिर, कसडोल तथा बलौदाबाजार से नारायणपुर और तुरतुरिया जैसे रामायणकालीन महत्वपूर्ण जीवंत स्थल । शिवरीनारायण के रथयात्रा पर्व, श्रावण झूला, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, भव्य माघी पूर्णिका का मेला, चंद्र ग्रहण व सूर्य ग्रहण, मकर संक्रांति पर्व, नवरात्र, रामनवमीं, विजयादशमी पर्व, महाशिवरात्रि पर्व अमृत महोत्सव के काल हैं। यहां तुरतुरिया स्थित बौद्ध विहार भी विशेष दर्शनीय स्थल है। यहां प्रत्येक वर्ष लगने वाला पौष-पूर्णिमा (छेरछेरा) का प्रसिद्ध एक दिवसीय मेला भी आकर्षण का केन्द्र है।

इसी परिपथ पर वनवास काल में वनवासी राजा राम अयोध्या से प्रयागराज, चित्रकूट, सतना गमन करते हुए दक्षिण कोसल (वर्तमान छत्तीसगढ़) के कोरिया जिले के भरतपुर पहुॅचकर मवई नदी को पार कर दण्डाकरण्य में प्रवेश किया। मवई नदी के तट पर बने प्राकृतिक गुफा मंदिर, सीतामढ़ी-हरिचौका में पहुंचकर उन्होनें विश्राम किया। रामचंद्र जी के वनवास का छत्तीसगढ़ में पहला पड़ाव भरतपुर के पास सीतामढ़ी-हरचौका को माना जाता है। छत्तीसगढ़ की पावन वसुधा पर रामायणकालीन महत्वपूर्ण घटनाएं फलित हुई है। हमारी लोक संस्कृति, लोक कला, दंतकथा, लोकोक्तियां इसके साक्ष्य हैं। शिवरीनारायण भी इनमें से एक जीवित प्रमाण है हमारी समृद्ध संस्कृति और सभ्यता का जो अक्षुण्य है।

पंडित मालिकराम भोगहा जी द्वारा शिवरीनारायण माहात्म्य में अद्भुत भावों से पूरित अभिव्यक्ति में वर्णित है कि-

आठों गण सुर मुनि सदा आश्रय करत सधीर।
जानि नारायण क्षेत्र शुभ चित्रोत्पल नदि तीर।।
देश कलिंगहि आइके धर्म रूप थिर पाई।
दरसन परसन वास अरू सुमिरन ते दुख जाई।।

इन भाव-पंक्तियों का अर्थ है कि आठों गण, देवता और मुनि धीरयुत हो नारायण क्षेत्र के चित्रोत्पला नदी के तट पर निरन्तर वास किया करते है। कलिंग देश का यह फाटक होने से यह पावन भूमि है। इहां को स्थिरता पाकर निवास करे वा दरसन परसन करे तो उसका दु:ख का अवश्य नाश हो जाता है।

ऐसा पवित्र, पुण्यदायक और मोक्षदायक श्री नारायण क्षेत्र छत्तीसगढ़ स्थित पुण्यप्रदायी चित्रोत्पला गंगा (महानदी) के तट पर स्थित है। स्कंद पुराण में इसे 'श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र' भी कहा गया है। आज भी यहां चतुर्भुजी विष्णु के अन्यान्य रूप जैसे शिवरीनारायण, केशवनारायण तथा लक्ष्मीनारायण की भव्य, आकर्षक और दर्शनीय प्रतिमाओं के अतिरिक्त वैष्णव मठ, श्रीरामजानकी मंदिर, श्रीराधाकुष्ण मंदिर और जगन्नाथ मंदिर हैं। प्राचीन काल से शिवरीनारायण को श्री नारायण क्षेत्र माना जाता है। युगानुयुग से इस क्षेत्र की महिमा पुण्यफलप्रदायक है। श्री शिवरीनारायण महात्म्य में इसका वर्णन निम्न पंक्तियों में आबद्ध है -

भगवदधाम जानीहि नारायण कलाश्रितम्
आदो विष्णु पुरी नाम ततो रामपुरं सप्तम्
बैकुण्ठपुर नामा सी ततो नारायण पुरम्
चित्रोत्पला नदी तीरे पुण्य कानन मंडिते
सिंदूर पर्वताभ्यासे तत्र नारायणेऽव्यय:
रोहिणी कुण्ड मासाद्य भक्ताया भीष्ट फल प्रद:।।

भावार्थानुसार इस पुण्य भगवद्धाम को नारायण के कलाश्रित जानिये। पूर्व में इसका नाम विष्णुपुरी, रामपुर, नारायणपुर तथा शबरीनारायण के नाम से प्रख्यात है। चित्रोत्पला नदी के किनारे सुंदर अमराई से आच्छादित सिंदूरगिरी सुशोभित है, तहां अ० श्रीनारायण विराजमान है। उनके चरण के नीचे 'रोहिणी कुंड' जो भक्तों को अभीष्ट फल देने वाला है स्थित है।

यहां के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र विग्रह हैं यहॉ स्थित प्राचीनकालीन मंदिर जिनमें प्रथम आता है नरनारायण मंदिर जो शबरीनारायण और बड़ा मंदिर के नाम से भी विख्यात है। यह मंदिर राजा शबर द्वारा निर्मित करवाया गया था और स्थापत्य व मूर्तिकला का सुंदर विग्रह है। को ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित भगवान नारायण की मूर्ति के चरणों में स्थित रोहिणी कुण्ड में वर्ष भर जल समान स्तर पर तापमान पर पूर्ण रहता है। इसके शिखर पर दस फीट ऊँचा स्वर्णिम कलश स्थापित है। मंदिर बहत्तर फीट ऊँचा और एक सौ छत्तीस फीट की परिधि में विस्तृत है। मंदिर का आकार एक गुम्बद की तरह है और यह श्रीयंत्र के समान जान पड़ता है।

मंदिर का मुख पूरब दिशा की ओर है। अत्यन्त प्राचीन मंदिर के गर्भ-गृह के द्वार पर जय-विजय नामक बैकुण्ठ लोक के द्वारपालों तथा गंगा और यमुना देवियों के विग्रह भी स्थित हैं। प्रवेश द्वार के ठीक ऊपर की ओर भगवान श्री गणेश और भगवान श्रीहरि विष्णु के विभिन्न अवतारों का चित्रण मिलता है। द्वार की शाख पर एक दूसरे से लिपटी नाग फांस की जाली, पत्थर के पाटों पर नाग-कन्याओं एवम् पुष्प-लताओं को उत्कीर्ण किया गया है। गर्भगृह के भीतर भगवान नारायण की पीताम्बरधारी मूर्ति मनमोहक दर्शित होती है। इस सुंदर, चतुर्भुजी प्रतिमा के चारो हाथों में श्रीहरि नारायण ने शंख, चक्र, गदा और कमल का पुष्प धारण किया हुआ है। गर्भगृह में स्थापित नारायण जी के श्रीचरणों में रोहणी कुण्ड स्थित है जिसका क्षेत्र सीमित करने के लिए इसे शालिग्राम पत्थर से ढांप दिया गया है। गर्भगृह में दीवार पर कुछ स्थानों पर प्रतीकों के रूप में कुछ संकेतक चिन्ह बने हैं। मंदर की दीवार बारह से पंद्रह फीट मोटी हैं। शिवरीनारायण स्थित मुख्य मंदिर के इस अष्टकोणीय प्राचीन गर्भगृह मे स्थापित मूर्ति के संबंध में विभिन्न किंवदंतियॉ प्रचलित है।

एक किंवदंती है कि यह शबरी के राम की प्रतिमा है, और कुछ लोगों में कृष्ण–बलदाऊ अथवा भगवान श्री हरि जगन्नाथ और बलभद्र के रूप में भी इनके दर्शन किये जाते हैं। श्री अश्विनी केशरवानी जी के आलेख 'जॉजगीर के विष्णु मंदिर की कलात्मकता की मिसाल' में एक कथा है जो प्राचीन रोचक प्रतिस्पर्द्धाओं की प्रचलित परम्पराओं को प्रकाशित करती है, इस कथा के अनुसार, शिवरीनारायण स्थित नरनारायण मंदिर और जॉजगीर स्थित श्रीहरि विष्णु जी के मंदिरों के निर्माण काल में दोनों मंदिरों में छहमासी रात्रि मं निर्मित होने की प्रतियोगिता रखी गई थी, भगवान नारायण ने घोषणा की थी कि जॉजगीर और शिवरीनारायण के मंदिरों में जो पहले पूर्ण होगा वह उस में ही प्रवेश करेंगे। दोनों मंदिरों में शिवरीनारायण का मंदिर पहले पूर्ण हुआ, जिससे भगवान नारायण ने इससे पदार्पण किया और जॉजगीर का मंदिर ऐसी अवस्था में शेष रह गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. भोगहा, मालिकराम, शिवरीनारायण माहात्म्य, अरपा प्रकाशन, बिलासपुर, पृष्ठ 15, 1988
2. त्रिपाठी, हीराराम शबरीनारायण महात्म्य, बैभव प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ 27, 1997
3. पटेल हरि राम, छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन, एच आर पब्लिकेशन पृष्ठ 195, 2018
4. मिश्र रमेन्द्र नाथ, छत्तीसगढ़ का इतिहास दीक्षित ब्रदर्स रायपुर, पृष्ठ 79, 1990
5. बेहार रामकुमार, छत्तीसगढ़ का इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर, पृष्ठ 55, 2018
6. महोपनिषद्, अध्याय .6, मंत्र 71

****